

64वाँ दीक्षांत समारोह, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली 11 फरवरी 2026

संस्थान के कृषि अभियांत्रिकी सभागार में प्रोफेसरों के प्रस्तुतिकरण के साथ भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली का 64वाँ दीक्षांत समारोह 11 फरवरी 2026 को प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. जसदीप सी. पडारिया, प्रोफेसर (एमबीबी) के संयोजन में किया गया, जिसमें डॉ. श्रुति सेठी, प्रधान वैज्ञानिक (एफएस एंड पीएचटी) सह-संयोजक रहीं। कार्यक्रम में डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (शिक्षा) तथा डॉ. पी.एस. ब्रह्मानंद, परियोजना निदेशक (जल प्रौ.केंद्र) की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में बागवानी विज्ञान संकाय और सामाजिक विज्ञान संकाय से उभरते प्रमुख वैज्ञानिक योगदानों को रेखांकित किया गया।

सत्र V – बागवानी विज्ञान की अध्यक्षता डॉ. राजी रेड्डी डांडा, कुलपति, श्री कोंडा लक्ष्मण तेलंगाना बागवानी विश्वविद्यालय, तेलंगाना ने की। इस सत्र में डॉ. कंवर पाल सिंह (पुश्पिज्ञान एवं भू दृश्य निर्माण), डॉ. राधा मोहन शर्मा (फल एवं औद्योगिकी प्रौद्योगिकी), डॉ. राम असरे (खाद्य विज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी) तथा डॉ. आर.के. यादव (शाकीय विज्ञान) ने प्रस्तुतियाँ दीं। बागवानी विज्ञान संकाय ने नवीन, गैर-रासायनिक पशु-फसल प्रौद्योगिकियों के माध्यम से महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। इनमें पर्यावरण-अनुकूल उपचार प्रोटोकॉल शामिल हैं, जो स्वास्थ्यवर्धक यौगिकों के संरक्षण, उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने, सड़न कम करने तथा शिमला मिर्च और अंगूर की भंडारण अवधि बढ़ाने में सहायक हैं। साथ ही, बागवानी उप-उत्पादों से प्राकृतिक रंगद्रव्यों की पुनर्प्राप्ति बढ़ाने हेतु अनुकूलित एंजाइमेटिक प्रसंस्करण तकनीकों को भी प्रस्तुत किया गया, जिससे मूल्य संवर्धन और अपशिष्ट उपयोग को बढ़ावा मिलता है।

सत्र VI – सामाजिक विज्ञान की अध्यक्षता डॉ. स्मिता सिरोही, भा.कृ.अनु.प. राष्ट्रीय प्रोफेसर, एम.एस. स्वामीनाथन चेयर, राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने की। इस सत्र में डॉ. प्रमोद कुमार (कृषि अर्थशास्त्र), डॉ. मनजीत सिंह नैन (कृषि प्रसार), डॉ. सिनी वर्गीज (कृषि सांख्यिकी), डॉ. सारिका (बायोइन्फॉर्मेटिक्स) तथा डॉ. अलका (कंप्यूटर अनुप्रयोग) ने तकनीकी योगदान दिया। सामाजिक विज्ञान संकाय ने साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण, प्रौद्योगिकी अंगीकरण, किसान आय वृद्धि, कृषि-उद्यमिता और ज्ञान प्रसार में अपने महत्वपूर्ण योगदानों को रेखांकित किया। प्रमुख तकनीकी एवं संस्थागत हस्तक्षेपों—जैसे एफपीओ, किसान क्रेडिट कार्ड, नीम-लेपित यूरिया, सोलर पंप, डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म, पूर्वानुमान प्रणाली तथा उभरते कार्बन बाजार—का व्यापक आकलन प्रस्तुत किया गया, जो किसान आय बढ़ाने और संसाधन उपयोग दक्षता सुधारने की क्षमता रखते हैं। साथ ही, प्रायोगिक डिजाइन, सर्वेक्षण नमूनाकरण, सांख्यिकीय मॉडलिंग तथा वेब-आधारित उपकरणों में उन्नत पद्धतिगत अनुसंधान को प्रदर्शित किया गया, जिसने बड़े पैमाने पर कृषि प्रयोगों और नीति विश्लेषण एवं मूल्य पूर्वानुमान के लिए सुदृढ़ सांख्यिकीय समाधान प्रदान किए। प्रत्येक सत्र के उपरांत अध्यक्ष के वक्तव्यों में अंतःविषय अनुसंधान एकीकरण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और किसान-केंद्रित नवाचार पर विशेष बल दिया गया। समग्र रूप से, कार्यक्रम ने खाद्य सुरक्षा, पशु-फसल प्रौद्योगिकी, स्थिरता और डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म से संबंधित राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के समाधान हेतु विकसित विभिन्न उपकरणों और तकनीकों के सामूहिक योगदान को रेखांकित किया।

द्वितीय सत्र में व्याख्यान डॉ. टी.के. भट्टाचार्य, निदेशक, एनआरसी इकाइन्स, हिसार द्वारा दिया गया, जो XXIV सुकुमार बसु स्मृति पुरस्कार (द्विवार्षिक 2023-24) के प्राप्तकर्ता हैं। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. के.एम.एल.

पाठक, पूर्व कुलपति, डुवासु, मथुरा एवं पूर्व उप-महानिदेशक (पशु विज्ञान), भा.कृ.अनु.प. ने की। अपने व्याख्यान में उन्होंने बायोरिएक्टर के रूप में ट्रांसजेनिक चना तथा अंडा उत्पादन में सुधार हेतु जीनोम-संपादित मुर्गी के विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने ड्यूल चिकन क्रॉस और रंगीन ड्यूल चिकन क्रॉस के विकास सहित अनेक उपलब्धियों का उल्लेख किया। इस व्याख्यान में बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।





आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली के 64वें दीक्षांत समारोह (11.02.2026) के चौथे दिन की झलकियाँ